2.हिन्दी

दसवीं कक्षा में दाखिल होने वाले विद्यार्थी की भाषा शैली और विचार बोध का ऐसा आधार बन चुका होता है कि उसे उसके भाषिक दायरे के विस्तार और वैचारिक समृद्धि के लिए ज़रूरी संसाधन मुहैया कराए जाएँ। माध्यमिक स्तर तक आते–आते विद्यार्थी किशोर हो गया होता है और उसमें बोलने, पढ़ने, लिखने के साथ–साथ आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होने लगती है। भाषा के सौन्दर्यात्मक पक्ष, कथात्मकता/ गीतात्मकता, अखबारी समझ, शब्द की दूसरी शक्तियों के बीच अंतर राजनैतिक चेतना, सामाजिक चेतना का विकास, उसमें बच्चे की अपनी अस्मिता का संदर्भ और आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त भाषा–प्रयोग, शब्दों के सुचिंतित इस्तेमाल, भाषा की नियमबद्ध प्रकृति आदि से विद्यार्थी परिचित हो जाता है। इतना ही नहीं वह विभिन्न विद्याओं और अभिव्यक्ति की अनेक शैलियों से भी वाकिफ होता है। अब विद्याार्थी की पढ़ाई आस पड़ोस राज्य–देश की सीमा को लांघ्ते हुए वैश्विक क्षितिज तक फैल जाती है। इन बच्चों की दुनिया में समाचार, खेल, फिल्म तथा अन्य कलाओं के साथ–साथ पत्र–पत्रिकाएँ और अलग–अलग तरह की किताबें भी प्रवेश पा चुकी होती है।

इस स्तर पर मातृभाषा हिंदी का अध्ययन साहित्यिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक भाषा के रूप में कुछ इस तरह से हो कि उच्चतर माध्यमिक स्तर तक पहुंचते–पहुंचते यह विद्यार्थियों की पहचान, आत्मविश्वास और विमर्श की भाषा बन सके। प्रयास यह भी होगा कि विद्यार्थी भाषा के लिखित प्रयोग के साथ–साथ सहज और स्वाभाविक मौखिक अभिव्यक्ति में भी समक्ष हो सके।

1. विद्यार्थी अगले स्तरों पर अपनी रूचि और आवश्यकता के अनुरूप हिन्दी की पढ़ाई कर सकेंगे तथा हिन्दी में बोलने और लिखने में सक्षम हो सकेंगे।
2. अपनी भाषा दक्षता के चलते उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, समाज विज्ञान और अन्य पाठ्यक्रमों के साथ सहज संबद्धता (अंतर्संबंध) स्थापित कर सकेंगें।
3. दैनिक व्यवहार, आवदेन–पत्र लिखने, अलग–अलग किस्म के पत्र लिखने, प्राथमिकी दर्ज कराने इत्यादि में सक्षम हो सकें।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पहुँचकर विभिन्न प्रयुक्तियों की भाषा के द्वारा उनमें वर्तमान अंतरसंबंध को समझ सकेंगे।
5. हिन्दी में दक्षता को वे अन्य भाषा–संरचनाओं की समक्ष विकसित करने के लिए इस्तेमाल कर सकेंगें, स्थानांतरित कर सकेंगे।

मातृभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य

- कक्षा आठ तक अर्जित भाषिक कौशलों (सूनना, बोलना, पढ़ना, लिखना और चिंतन) का उत्तरोत्तर विकास।
- सृजनात्मक साहित्य के आलोचनात्मक आस्वाद की क्षमता का विकास।
  स्वतंत्र और मौखिक रूप से अपनी विचारों की अभिव्यक्ति का विकास।
- ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना।

- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं (राष्ट्रीयताओं, धर्म, लिंग भाषा) के प्रति सकारात्मक और संवेदानशील रवैये का विकास।
- जाति, धर्म, लिंग, राष्ट्रीयताओं, क्षेत्र आदि से संबंधित पुर्वग्रहों के चलते बनी रूढ़ियों की भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सजगता।
- विदेशी भाषाओं समेत गैर हिंदी भाषाओं की संस्कृति की विविधता से परिचय।
  व्यावहारिक और दैनिक जीवन में विविध किस्म की अभिव्यक्तियों की मौखिक व लिखित क्षमता का विकास।
- संचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से अवगत कराना और नए–नए तरीके के प्रयोग करने की क्षमता से परिचय।
- सघन विश्लेषण, स्वतंत्र अभिव्यक्ति और तक्र क्षमता का विकास।
- अमूर्तन की पूर्व अर्जित क्षमताओं का उत्तरोत्तर विकास।
- भाषा में मौजूद हिंसा की संरचनाओं की समक्ष का विकास।
- मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भी भाषा के संवेदनशील ओर तक्रपूर्ण इस्तेमाल से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास।
- भाषा की समावेशी और बहुभाषिक प्रकृति के प्रति ऐतिहासिक नजरिए का विकास।
- शारीरिक और अन्य सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चों में भाषिक क्षमताओं के विकास की उनकी अपनी विशिष्ट गति और प्रतिभा की पहचान।

पाठ्य–सामग्री

1. **काव्य और गद्य संग्रह भाग–1 और भाग–2**
   (प्रमुख रचनाकारों द्वारा लिखे साहित्य की विविध विद्याओं से संबंधित काव्य और गद्य लगभग 17 पाठ होंगे।) प्रश्न– अभ्यासों के द्वारा पाठगत संदर्भयुक्त भाषिक– प्रयोगों की ओर ध्यान दिलाते हुए भाषा की नियमबद्ध प्रकृति से परिचित कराया जाएगा। इस पुस्तक के अंत में परिशिष्ट के रूप में भिन्न ज्ञानानुशासनों में प्रयुक्त शब्दावलियों की सूची होगी।
2. **पूरक पाठ्यपुस्तक –** विद्यार्थियों में पठन रूचि पैदा करने के लिए साहित्य की विविध विद्याओं की रचनाओं का एक संकलन होगा।

शिक्षण युक्तियाँ

माध्यमिक कक्षाओं में अध्यापक की भूमिका उचित वातावरण के निर्माण में सहायक की होनी चाहिए। भाषा और साहित्य की पढ़ाई में इस बात पर ध्यान देने की जरूरत होगी कि–

- विद्यार्थी द्वारा की जा रही गलतियों को भाषा के विकास के अनिवार्य चरण के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी अबाध रूप बिना झिझक लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति करने में उत्साह का अनुभव करें। विद्यार्थियों पर शुद्वि का ऐसा दबाव नहीं होना चाहिए कि बे तनावग्रस्त माहौल मे पड़ जाएँ। उन्हें भाषा के सहज, कारगर और रचनात्मक रूपों से इस तरह परिवर्तन की आवश्यकता होगी।

- गलत से सही दिशा की ओर पहुँचने का प्रयास हो। विद्यार्थी स्वतंत्र और अबाध रूप से लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति करे। अगर कहीं भूल होती है तो अध्यापक को अपनी अध्यापन शैली में परिवर्तन की आवश्यकता होगी।
- ऐसे शिक्षण–बिंदुओं की पहचान की जाए जिससे कक्षा में विद्यार्थी निरंतर सक्रिय भागीदारी करे और अध्यापक भी इस प्रक्रिया में उनका साथी बने।
- हर भाषा का अपना एक नियम और व्याकरण होता है। भाषा की इस प्रकृति की पहचान कराने में परिवेशगत और पाठगत संदर्भों का ही प्रयोग करना चाहिए। यह पूरी प्रक्रिया ऐसा होनी चाहिए कि विद्यार्थी स्वयं को शोध कर्ता समझे तथा अध्यापक इसमें केवल निर्देशन करें।
- हिंदी में क्षेत्रीय प्रयोगों, अन्य भाषाओं के प्रयोगों के उदाहरण से यह बात स्पष्ट की जा सकती है कि भाषा अलगाव में नहीं बनती और उनका परिवेश अनिवार्य रूप से बहुभाषिक होता है।
- शारीरिक बाधग्रस्त विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शिक्षण–सामग्री और इस्तेमाल किया जाए तथा किसी भी प्रकार से उन्हें अन्य विद्यार्थियों से कमतर या अलग न समक्षा जाए।
- कक्षा में अध्यापक को हर प्रकार की विभिन्नताओं (जेंडर, जाति, वर्ग, धर्म) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील वातावरण निर्मित करना चाहिए।
- परंपरा से चले आ रहे मुहावरों, कहावतों (जैसे, रानी रूठेंगी तो अपना सुहाग लेंगी) आदि के जरिए विभिन्न प्रकार के पूर्वाग्रहों की समझ पैदा करनी चाहिए और उनके प्रयोग के प्रति आलोचलनात्मक दृष्टि विकसित करनी चाहिए।
- मध्य कालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए जरूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो–वीडियों कैसेट तैयार किए जाएँ। अगर आसानी से कोई गायक/ गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन–शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- वृत्तचित्रों और फीचर फिल्मों को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की जरूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के जरिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग–अलग छटा दिखाई जा सकती हैं।
- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर यह है कि शिक्षक के हाथ में तरह–तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षक उनका कक्षा में अलग–अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सकें।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे है। इससे विद्यार्थियों में इनके इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुँचकर संतुष्ट होने की जगह वे अधितम अर्थ की खोज करने का अर्थ समझ जाएंगे। इससे शब्दों की अलग–अलग रंगत का पता चलेगा, वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएंगे।

व्याकरण बिंदु

विद्यार्थियों को मातृभाषा के संदर्भ में व्याकरण के विभिन्न पक्षों का परिचय कक्षा 3 से ही मिलने लगता है। हिंदी भाषा में इन पक्षों और हिंदी की अपनी भाषागत विशिष्टतताओं की चर्चा पाठ्यपुस्तक

और अन्य शिक्षण सामग्री के समृद्ध संदर्भ में की जानी चाहिए। नीचे कक्षा 6 से 10 के लिए कुछ व्याकरणिक बिंदु दिए गए है जिन्हें कक्षा या विभिन्न चरणों के क्रम में नही रखा गया है।

संरचना और अर्थ के स्तर पर भाषा की विशिष्टताओं की परिधि इन व्याकारणिक बिंदुओं से कहीं अधिक विस्तृत है। वे बिंदु इन विशिष्टताओं का संकेत भर हैं जिनकी चर्चा पाठ के सहज संदर्भ में और बच्चों के आसपास उपलब्ध भाषायी परिवेश को ध्यान में रखते हुए की जीनी चाहिए।

कक्षा 6 से 10 तक के लिए कुछ व्याकरण बिन्दु

- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविश्लेषण
- लिंग, वचन, काल
- पदबंध में लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव
- वाक्य में कर्ता और कर्म के लिए और वचन का क्रिया पर प्रभाव
- परसर्ग, 'ने' का क्रिया पर प्रभाव
- अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक, प्रेरणार्थक
- सरल, संयुक्त, मिश्र वाक्य
- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य
- समुच्यबोधक शब्द और अन्य–अविकारी शब्द
- पर्यायवाची, विलोम, समास, अनेककार्थी, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द, मुहावरे

समय :3घण्टे कक्षा – दसवीं कुल अंक – 80

1. पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-2' (गद्यखण्ड) 20 अंक

1. गद्यांश (वैकल्पिक) पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देना। 5x2=10
2. गद्य पाठों पर आधारित पाँच में से तीन प्रश्नों के उत्तर देना। 3x2=6
3. गद्य पाठों पर आधारित दो में से एक प्रश्नों के उत्तर देना। 1x4=4

(गद्यखण्ड) 20 अंक

4. काव्यांश (वैकल्पिक) पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देना। 5x2=10
5. कविताओं पर आधारित पाँच में से तीन प्रश्नों के उत्तर देना। 3x2=6
6. कविताओं पर आधारित दो में से एक प्रश्नों के उत्तर देना। 1x4=4

2. पूरक पुस्तक 'कृतिका भाग-2' 10 अंक

7. पाठों पर आधारित पाँच में से तीन प्रश्नों के उत्तर देना। 3x2=6
8. पाठों पर आधारित दो में से एक प्रश्नों के उत्तर देना। 1x4=4

3. व्याकरण 10 अंक

9. व्याकरण के प्रकरणों से संबंधित पाँच प्रश्नों के दस उपभागों के (निर्देशानुसार) उत्तर देना। 10x1=10

4. निबन्ध लेखन

10. दिए गए पाँच विषयों में से किसी एक विषय पर 200-250 शब्दों में निबन्ध लिखना। 8

5. पत्र लेखन

11. दिए गए दो में से किसी एक विषय पर पत्र लिखना। 7
12. संवाद/सूचना/प्रतिवेदन लेखन (तीनों में से एक विषय पर लिखना) 5

80